# चित्रकार सतवंत सिंह के रेखाचित्रों का अद्‌भुत संसार

**डॉ0 कविता सिंह**
असि0 प्रो0, (स्टेज–III), सरदार शोभा सिंह, डिपा0 फॉइन आर्ट,
पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला, पंजाब, भारत
Email: singhart6@gmail.com

**सारांश**

*इस शोधपत्र में विख्यात चित्रकार सतवंत सिंह की संपूर्ण कला यात्रा तथा उनके अमूल्य योगदान व मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के साथ–साथ उनकी कला खोज की परत दर परत को उजागर करने का भरपुर प्रयास किया गया है, उनकी अनेक कलाकृतियों में बसने वाले किरदार, आकार, विचार व आकृतियों पर रोशनी डालते हुए तकनीकी बारीकियों व कला साधना का पूर्ण अध्ययन हैं।*

***मुख्य शब्द–*** *विन्सेंट वॉन गॉग, फैज़ अहमद फैज़, सतवंत सिंह, रेखाचित्र, निरूपमा दत्त, शिमला, फ्रॉयडवादी, बी.एन. गोस्वामी, मैक्स अर्नस्ट, अतिययार्थवाद, दृश्य कला, डी.सी. भट्टाचार्य, केशव मलिक।*

## प्रस्तावना

महान चित्रकार **'विन्सेंट वॉन गॉग'** ने कभी कहा था, ''मैं जुनून में मरना पसंद करूंगा ना कि नीरसता में।'' और इसी ख्याल को आगे बढ़ाते हुए उर्दू के विख्यात कवि **'फैज़ अहमद फैज़'** ने जुनून की महत्त्वता को बयान करते हुए लिखा था, ''हर पल जुनून में बिताने का प्रतिफल बहुत लुभावना होता है जबकि दिल को इसका गहरा दर्द सहना पढ़ता है।'' शायद इसी कारण चित्रकार सतवंत सिंह महसूस करते हैं कि जुनून ही जिंदगी तथा रचनात्मकता का अमृत है जोकि हर कलाकृति की नस–नस में दौड़ता है। सतवंत सिंह की कला की उत्पत्ति असंख्य मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा इच्छाओं की जड़ से उत्पन्न होकर सूक्ष्म आवेगों व वेदनाओं की परतों को चीरते हुए इन्सानी मानसिकता के धरातल को छूती है।**(1)**

चित्रकार सतवंत सिंह के रेखाचित्रों से रूबरू होना अपने आप में एक अनोखा अनुभव है क्योंकि उनकी कला शुद्धतम आवेशों का जीता जागता खेल है, उनके हर स्ट्रोक में एक नपी तुली गती व पैनापन है। प्रख्यात कला समीक्षक **'निरूपमा दत्त'** सतवंत सिंह की कला यात्रा के बारे में लिखती है, ''मेरा इस कलाकार व उसके काम के साथ एक लंबे समय से जुड़ाव रहा है और मैं उनकी हर नई कलाकृति को देखते हुए यह महसूस करती हूँ कि उनका हर एक रेखाचित्र एक अद्‌भुत ऊर्जा के संचार से आवृत होता है, शायद ही कोई सामान्य मनुष्य इतना दम–खम संजोने की क्षमता रखता हो। यहाँ हम किसी साधारण चित्रकार के बारे में बात भी तो

नहीं कर रहे हैं। सतवंत सिंह एक उच्च श्रेणी के समकालीन चित्रकार हैं जिनको कला का वरदान जन्म से ही मिला है और जिसका परिपौषण उन्होंने पिछले 50 वर्ष से सूक्ष्मता की गहराईयों को छूते हुए किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपनी माँ की गर्भ से निकलते ही ब्रश को थाम लिया होगा। उर्वर व बहुमुखी प्रतिभाओं के मालिक इस चित्रकार ने रेखाचित्रों, पेन्टिंग, मूर्तिकला, भित्तिचित्र, व्यंग–चित्र, इलस्ट्रोशन तथा वर्णनात्मक कविता में निरंतर अपना योगदान दिया है।''**(2)**

चित्रकार सतवंत सिंह का जन्म 1948 में पहाड़ों की मल्लिका–**'शिमला'** में प्रकृति की गोद में हुआ तथा उन्होंने **'चंडीगढ़ कॉलेज आफ आर्ट'** से कला की शिक्षा प्राप्त करके चंड़ीगढ़ से ही अपना कलात्मक करियर प्रारंभ किया। आप 2006 में **'डिजाइन फैकल्टी'** के अध्यक्ष के तौर पर सेवामुक्त हुए तथा कई वर्षों तक **'चंड़ीगढ़ कॉलेज आफ आर्किटेक्चर'**में भी कार्य करते रहे। आप **'चंडीगढ़ ललित कला अकादमी'** के **'कार्यकारी सदस्य'** भी रहे। आपके रेखाचित्रों के संसार में चहचहाते पक्षी, सहज स्वभाव से मिमियाते मेमने तथा बकरियाँ, गाय, रौबदार मुर्गे, काँ–काँ करते काले कौवे, रहस्मयी उल्लू, मछलियाँ तथा जल–परियाँ, गुड़िया तथा कुकुरमुत्ता के पौधों पर नाचती परियाँ हैं जो कभी–कभी आधे मानव व आधे जानवर के हाथ–पैर और सींग अपनाकर अद्भुत जादूमयी दुनिया से आती प्रतीत होती हैं। इन मंत्रमुग्ध चित्रों में **'फ्रॉयडवादी'** विचारों की झलक मिलती है जिसमें मानवीय लालसाओं तथा इच्छाओं को प्रदर्शित करती जीवन की सर्कस व जीवन के विकास की कहानी है। कहीं दरिंदगी तथा कहीं सहमें हुए शिकार की लुका–छिपी है। हर पल इन्सान नई चुनौतियों से जूझता हुआ मानसिक संतुलन कायम करते हुए दुःख –सुख के दायरों में चक्कर लगाता रहता है।**(3)**

सतवंत सिंह के रेखाचित्र पदार्थ और आध्यात्मिक तत्वों के वास्तविक प्रतिनिधित्व हैं। सूक्ष्म तथा गहरे विचारों को दरसाने के लिए वे बहुत रोचक चिन्हों और रूपकों का प्रयोग करते हैं जिसमें विधाता की रचना–शक्ति की झलक दिखाई देती है जो एक पुरानी मदिरा की तरह धीरे–धीरे दर्शक के मन–मस्तिष्क को अपने वश में कर लेती है। हर रेखाचित्र की अंतर्धारा में जुनून प्रमुख तौर पर तैरता है। आपकी कला कौशल में रेखा, आकार, रंग व टेक्स्चर का अनमोल सुमेल है जो आपने वर्षों की साधना करके प्राप्त किया है। इसी कारण आप सहज रूप से अपने विचार दर्शकों तक पहुँचाने में बहुत सफल रहे हैं।

विख्यात कला इतिहासकार व समीक्षक **'पद्मविभूषण डा0 बी.एन. गोस्वामी'** कहते हैं, ''जब मैं सतवंत सिंह के रेखाचित्र देखता हूँ तो दिल में एक विचार आता है की आप अतियथार्थवादी शैली के चित्रकार हैं पर मेरा मस्तिष्क यह नहीं मानता क्योंकि आपकी एक अनूठी ही शैली है जो आपको एक रोचक तथा अद्भुत श्रेणी में खड़ा पाती है। 20वीं सदी के महान अतियथार्थवादी चित्रकार **'मैंक्स अर्नस्ट'** की अतियथार्थवाद कला की परिभाषा में आपके चित्र अनुकूल नहीं बैठते क्योंकि आपके रेखाचित्र आपके विचारों, जोशीले कारणों तथा प्रबल इच्छा–शक्ति को उकेरते है जिनमें सहजता तथा चपलता का मधुर तालमेल होता है। आपके पैन और इंक रेखाचित्रों में आकस्मिक तत्व हर कोने से झाँकता है ऐसे अचेतन मन में पनपते विचारों

को बयान करना कोई सहज कार्य नहीं हैं किन्तु यह प्रतीत होता है कि कोई भी आकार व आकृति यूहीं नहीं संजोई गई, इसके पीछे बहुत से संजीदा कारण हो सकते हैं। पर यह सब आँख और मन को खूब लुभाते हैं। कभी–कभी हल्के–फुल्के तत्व हवा में तैरते हैं तो कभी चपलता से आधे–अदृश्य हो जाते हैं और एक अद्‌भुत सी चंचलता प्रदान करते हैं। पारदर्शी चट्टानों पर फुदकते पक्षी, हवा में निहारते कौवे, सात सरों वाले दौड़ते घोड़े, आसमान से लटकती लहसुन व प्याज की घुमावदार जड़ें, शांति से आँख मीचे ब्राह्मणी बैल मोहनजोदड़ो की मोहरों से निकले प्रतीत होते हैं जिनपें तितलियाँ नाचती हुई एक जंगली धुन से गुंज रहे वातावरण में उड़ रही हैं तथा अचानक ही सृष्टि की रचना का सुनहरा अंड़ा आपके सम्मुख उभरता है। यह सतवंत सिंह का अनोखा संसार है जिसमें हर बात चिन्हों व रूपकों की जुबानी कही जाती है।''[1]**(4)**

सतवंत सिंह के ब्रश और इंक रेखाचित्र से हम भली भाँती परिचित हैं, जो तनाव उनके पहले के चित्रों में था वो अब पिघल चुका है। एक नई दिशा की ओर उनके चित्र मस्त चाल में चलते हुए एक सुखद दुनिया की झलकियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें किसी ख़ास विचार पर केन्द्र–बिन्दु करने की कोई जल्दबाज़ी नहीं और चित्रकार सतवंत सिंह को यह संतुष्टि है की उनके दर्शक तथा कला प्रेमी बाखूबी से उड़ के उनके काम में रोमांचिकता का रस पीने लगे हैं और उन्हें किसी विचार को सुलझाने की कोई लालसा नहीं और दर्शक पूरे के पूरे चित्र का आनंदमय लुत्फ़ लेने लगे हैं।

**'डा. बी.एन. गोस्वामी'** आगे कहते हैं, ''चित्रकार सतवंत सिंह के मज़बूत स्ट्रोक व पूर्ण नियंत्रण के उकेरी गहरी काली स्याही से सफ़ेद कागज पर छाप छोड़ती आकृतियों में अब कहीं–कहीं पुरानी स्मृतियों के इलावा नए किरदार जैसे की मुस्कराता हुआ बनमानुश, घुंघराले बालों वाले जंगली घोड़े, उभरी कूबड़ वाले बैल, हवा में तैरता मानव ह्रदय तथा उस पर ठठोलियाँ करती चिड़ियाँ। कभी–कभी यह मानव ह्रदय पार्क के बैंच पर पड़ा है तो कभी ज़मीन पर पड़ा रस्सी पर सूखते कपड़ों को निहार रहा है तो कभी ब्रहमांड़ में तैरता अनोखी तथा अजीव दुनिया की खोज में एक उड़ते यात्री की तरह भी देखा जा सकता है जिस पर कभी–कभी तितलियाँ भी मंडराती नज़र आती हैं। सतवंत सिंह के पास एक जादुई कला कौशल है तथा वे विभिन्न किरदारों को अपनी उँगली पर नचाने में माहिर हैं।''[2]**(5)**

अंदरूनी शांति ही शायद सतवंत सिंह की बड़ी उपलब्धि है जो उनकी रेखा–चित्रकला को निपुणता प्रदान करती है तथा वे मनमाने ढंग से रेखाओं के जाल में सूक्ष्म व गहरे विचारों को जकड़ने में बाखूबी कामयाब हैं। यूँ ही नहीं उन्होंने अपना माध्यम रेखाचित्र रखा है। उनको दृश्य कला की संरचना तथा नित–नए आकार घड़ने की भी पूरी समझ तथा महारत है क्योंकि जब तक दृश्य कला की भाषा व व्याकरण की समझ न हो, कोई भी चित्रकार ज़्यादा सफल नहीं हो सकता व निरंतर साधना से ही शिल्पकारिता की ऊँचाईयाँ छू सकता है। एक लंबी ध्यान–यात्रा के उपरंत ही उन्होंने अपने रूपकों व चिन्हों को जन्म दिया है जिनमें उनके बचपन के दोस्त पशु–पक्षी एक खास स्थान रखते हैं तथा शिमला के मनोहारी दृश्य जिसमें ना–ना प्रकार की वनस्पति, पेड़ व वृक्ष, सुंदर चट्टानें, कल–कल करते झरने, बर्फ से ढकीं पहाड़ियाँ तथा घरों की

छतों पर चमकते ओस के मोती व शाँत स्वभाव वाली पगडंड़ियों का विशेष उल्लेख है। इन्सानों में मासूमियत खो जाने का चित्रकार सतवंत सिंह को बहुत मलाल है। आपके चित्रों में मानव में पाई जाने वाली पशु–वृत्ति का भी जिक्र है इसका मतलब यह नहीं की अपने रेखाचित्रों द्वारा आप दर्शकों को विद्रोह पर उतारू होने को प्रेरित करते है।

प्रख्यात कला समीक्षक व इतिहासकार '**डॉ0 डी.सी. भट्टाचार्य**कहते हैं, ''एक मुनासिब प्रश्न यह भी है कि क्या सतवंत सिंह एक ख्यातिपूर्वक पंजाबी चित्रकार होते हुए पंजाबी पृष्ठभूमि की कोई छाप जैसे की शरीर तथा मन की मज़बूती व स्वभाव में खुलापन जिसको हम पंजाबियत कहते हैं का कोई अंश उनके चित्रों में झलकता है? मेरे अध्ययन के अनुसार आप में एक अंतरराष्ट्रीयता तथा सरल मानवीय भावों की खुशबू आती है जिसमें किसी क्षेत्र, देश या कौम का कोई महत्त्व नहीं।''[3] प्रसिद्ध कला समीक्षक **'केशव मलिक'**लिखते है, ''सतवंत सिंह ब्रष्त्रश को ऐसे पकड़ते है जैसे कोई जादूगर अपनी जादू की छड़ी और हवा में से एकदम कुछ ना कुछ प्रगट d j usesa eFkZgSa* **(6)**

चित्रकार सतवंत सिंह अनेको–अनेक पुरस्कार व अनुभुतियों से सम्मानित हो चुके हैं तथा आपके खास मित्र व प्रंशसकों में चित्रकार राज जैन, एन.के. डे, सुशील सरकार, सुर्निमल चटर्जी के इलावा वीरेन तनवर, रणबीर कालेका, गुरचरण सिंह आदि हैं जिन्होंने कई वर्षों तक इक्ट्ठे काम किया। अन्य खास प्रंशसक–सुप्रसिद्ध लेखक सरदार खुशवंत सिंह, चित्रकार प्रेम सिंह, कला समीक्षक–एस.एस. भट्टी व वास्तुकार–यूली चौधरी हैं। निरंतर 60 साल से आप कला में मग्न हैं तथा आपके चित्र कला अकादमियों, गेलेरियों, संग्रहालयों व कला केन्द्रों तथा बहुत से अंतरराष्ट्रीय कला संग्रहकर्त्ताओं के पास है जो इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, फिजी आइलन्ड, मलेशिया, थाईलैंड, फ्रांस आदि में हैं। आजकल रेखाचित्र बनाने वालों की गिनती घट रही है किन्तु यह आशा की जाती है कि नए पीड़ी के कलाकार भी आपके रेखाचित्रों से प्रेरणा लेकर अनूठे चित्र बनाएगें, जैसे कई वर्ष पहले अपनी युवा अवस्था में सतवंत सिंह ने कई विख्यात चित्रकारों जैसे की जयोति भट्ट, जे. सुल्तान अली, लक्ष्मा गौड़, के.सी.एस. पानीकर व एफ.एन. सूज़ा की कला से प्रेरणा ली तथा वे उनके मित्रों में शामिल थे।

## संदर्भ


1. **गोस्वामी, बी.एन.;** 19अक्टूबर, 1978, *अ वर्ल्ड ऑफ फ़ेन्टसी*, द ट्रिब्यून।
2. **गोस्वामी, बी.एन.;** 26 फरवरी, 1981, *द हार्टस रीज़न*, द ट्रिब्यून।
3. **भट्टाचार्य, डी.सी.;** 1997, *पंचजन्य–द पेन्टैड ऑफ पंजाबी आर्टिस्ट, कन्टेम्परेरी आर्टिस्ट ऑफ पंजाब*, वाल्यूम–प्प, पंजाब ललित कला अकादमी, चंड़ीगढ़, पृष्ठ : **25–28.**

**Plate No. 1**

**Plate No. 2**

**Plate No. 3**

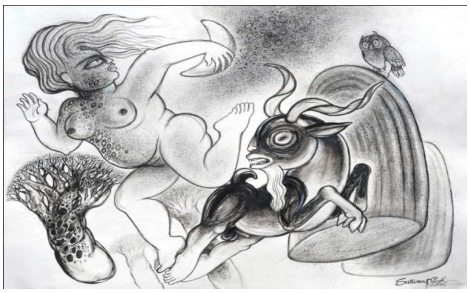

**Plate No. 4**

**Plate No. 5**

**Plate No. 6**